स्वतंत्रता के बाद भारतीय सिनेमा का विकास

स्वतंत्रता के बाद भारतीय सिनेमा ने एक लंबा सफर तय किया है। इस दौरान कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए और भारतीय सिनेमा ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

*1947-1960: स्वर्णिम युग

यह दौर भारतीय सिनेमा का स्वर्णिम युग माना जाता है। इस समय कई बेहतरीन फिल्में बनीं, जिन्होंने सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर प्रकाश डाला,जैसे दो बीघा ज़मीन (1953), मदर इंडिया (1957), प्यासा (1957)।

इस समय गीत-संगीत प्रधान फिल्मों का भी दौर रहा, जिसमें शंकर-जयकिशन, एस.डी. बर्मन, नौशाद जैसे संगीतकारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस दौर में गुरु दत्त, विमल रॉय, राज कपूर, और महबूब खान जैसे निर्देशकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

*1960-1980: व्यावसायिक सिनेमा का उदय: इस दौर में बॉलीवुड अधिक व्यावसायिक हुआ और मसाला फिल्मों का चलन बढ़ा। रोमांस, एक्शन और ड्रामा से भरपूर फिल्में लोकप्रिय हुईं, जैसे मुगल-ए-आज़म (1960), शोले (1975), दीवार (1975)। अमिताभ बच्चन जैसे सितारे 'एंग्री यंग मैन' छवि के साथ उभरे।

* समानांतर सिनेमा (आर्ट सिनेमा):

इस दौर में समानांतर सिनेमा का उदय हुआ। यह सिनेमा मुख्यधारा के सिनेमा से अलग था और इसमें सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को अधिक गहराई से दिखाया जाता था। सत्यजीत रे, मृणाल सेन, और श्याम बेनेगल जैसे निर्देशकों ने समानांतर सिनेमा को बढ़ावा दिया, जिसमें अंकुर (1974), मंथन (1976), आक्रोश (1980) जैसी फिल्में बनीं।

*1980-2000: आधुनिक सिनेमा की ओर: इस दौर में व्यावसायिक सिनेमा का बोलबाला रहा। इस समय रोमांस, एक्शन और ड्रामा से भरपूर फिल्में लोकप्रिय हुईं। तकनीकी रूप से भारतीय सिनेमा ने प्रगति की, विशेष रूप से वीएफएक्स और विदेशी लोकेशन का उपयोग बढ़ा।

*2000-वर्तमान: वैश्विक पहचान:

2000 के बाद भारतीय सिनेमा ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। मल्टीप्लेक्स संस्कृति का विकास हुआ, जिससे कंटेंट-ओरिएंटेड फिल्मों को बढ़ावा मिला। इस दौरान कई फिल्में ऑस्कर और अन्य अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए नामांकित हुई हैं। वेब सीरीज और ओटीटी प्लेटफार्म का प्रभाव बढ़ा, जिससे फिल्म निर्माण की शैली बदली।आज भारतीय सिनेमा दुनिया के सबसे बड़े फिल्म उद्योगों में से एक है।

*कुछ महत्वपूर्ण बातें

•स्वतंत्रता के बाद भारतीय सिनेमा ने कई क्षेत्रीय भाषाओं में फिल्में बनाना शुरू किया।क्षेत्रीय सिनेमा को भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली।

• इस दौरान कई नई तकनीकों का इस्तेमाल किया गया, जिससे फिल्मों की गुणवत्ता में सुधार हुआ। डिजिटल तकनीक और वीएफएक्स का उपयोग बढ़ा। जिसमें कृष (2006), रोबोट (2010), रा.वन (2011), बाहुबली (2015-2017) जैसी फिल्म महत्वपूर्ण हैं।

*निष्कर्ष

1947 के बाद भारतीय सिनेमा ने सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी रूप से अपार प्रगति की। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि एक प्रभावी माध्यम बन गया, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है।भारतीय सिनेमा ने समाज को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।